



International Journal of Advanced Research in Education and Technology (IJARETY)

Volume 13, Issue 4, July – August 2026

Impact Factor: 9.971



विकसित भारत के संकल्प के समक्ष चुनौतियाँ एवं समाधान

Dr. Monica Vijay

Working in School Education Department, Rajasthan, India

शोध सारविक: सित भारत' का औपचारिक शुभारंभ एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारत की स्वतंत्रता के 100वें वर्ष, यानी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने की संभावना वास्तव में मनोरम है। 'विकसित भारत' के तहत विजन इंडिया 2047 अगले 25 वर्षों में भारत के विकास का खाका तैयार करने के लिये भारत के शीर्ष नीति थिंक टैंक नीति आयोग द्वारा शुरू की गई एक परियोजना है। परियोजना का लक्ष्य भारत को नवाचार एवं प्रौद्योगिकी में वैश्विक अग्रणी देश, मानव विकास एवं सामाजिक कल्याण का मॉडल और पर्यावरणीय संवहनीयता का चैंपियन या उत्साही पक्ष-समर्थक बनाना है।

कुछ समय पूर्व ही देश ने अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे करके आजादी के अमृतकाल में प्रवेश किया है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की है कि भारत 2047 तक विकसित देश का दर्जा हासिल कर लेगा। नरेंद्र मोदी जी के अनुसार “हमें 2047 तक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना है जो अतीत के गौरव से जुड़ा हो, और जिसमें आधुनिकता का हर स्पर्धामय अध्याय हो। ऐसा भारत, जिसमें गरीबी न हो, जिसका मध्यम वर्ग भी वैभव से युक्त हो। ऐसा भारत, जिसकी युवाशक्ति और नारीशक्ति, समाज और राष्ट्र को दिशा देने के लिए सबसे आगे खड़ी हो, जिसके युवा समय से दो कदम आगे चलते हों। ऐसा भारत, जिसकी विविधता और अधिक उज्ज्वल हो, जिसकी एकता और अधिक अटल हो।”

एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत 2030 की शुरुआत में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है और 2060 तक इसकी जीडीपी अमेरिका से अधिक हो सकती है। किसी भी पैमाने पर, भारत पहले से ही एक आर्थिक महाशक्ति है, जिसने पिछले दो दशकों में दुनिया की सबसे ऊंची विकास दर हासिल की है और 2000 के बाद से प्रति व्यक्ति आय तीन गुना बढ़ गई है।

हालाँकि, अपनी भविष्य की महत्वाकांक्षाओं को साकार करने के लिए, भारत को एक बड़े पैमाने पर कृषि प्रधान, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था से एक सेवा, उन्नत विनिर्माण और ज्ञान-आधारित केंद्र में बदलना होगा, जिससे खुद को दुनिया की बढ़ती तकनीकी परिष्कार का पूरा लाभ उठाने और स्थिरता के लिए ड्राइव करने के लिए तैयार किया जा सके।

देश की तीव्र प्रगति को देखते हुए इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को साकार कर सकना संभव नजर आता है। 'विकसित भारत' के तहत आर्थिक विकास पर अत्यधिक बल दिया गया है। यह क्षण इच्छित विकास की अवधारणा का मूल्यांकन करने का भी अवसर प्रदान करता है। विकास प्राथमिकताओं और फोकस क्षेत्र का चयन जटिल और महत्वपूर्ण, दोनों हैं। अतः अगले 25 वर्ष हम सबके लिए और देश के प्रत्येक नागरिक के लिए कर्तव्यों की पराकाष्ठा करके दिखाने के हैं। यह हमारे सामने युग निर्माण का अवसर है, और हमें इस अवसर के लिए शत-प्रतिशत सामर्थ्य के साथ हर क्षण कार्य करना है।

मूल शब्द: विकसित, प्राथमिकता, सामर्थ्य, मानव विकास, अर्थव्यवस्था।

I. परिचय

भारत, विश्व की सबसे पुरानी जीवंत सभ्यताओं में से एक है। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था, लोकतंत्र की पश्चिमी अवधारणा से कहीं अधिक प्राचीन है। इसीलिए भारत को “लोकतंत्र की जननी” कहा जाता है। स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में, हमें अनगिनत चुनौतियों और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। लंबे विदेशी शासन के अनेक बुरे परिणामों में से दो कुप्रभाव थे - भयंकर गरीबी और निरक्षरता। फिर भी, भारत अविचलित रहा। आशा और विश्वास के साथ, हमने मानव जाति के इतिहास में एक अनूठा प्रयोग शुरू किया। इतनी बड़ी संख्या में इतनी विविधताओं से भरा जन-समुदाय - एक लोकतंत्र के रूप में एकजुट नहीं हुआ था। ऐसा हमने इस विश्वास के साथ किया कि हम सब एक ही हैं, और हम सभी भारतीय हैं। इतने सारे पंथों और इतनी सारी भाषाओं ने हमें विभाजित नहीं किया है बल्कि हमें जोड़ा है। इस अवधि के दौरान, भारत एक गरीब और निरक्षर राष्ट्र की स्थिति से आगे बढ़ते हुए विश्व-मंच पर एक आत्मविश्वास से भरे राष्ट्र का स्थान ले चुका है। हमारा देश स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर बढ़ते हुए अमृत काल के प्रारंभिक दौर से गुजर रहा है। यह एक युगांतरकारी परिवर्तन का कालखंड है। हमें अपने देश को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का सुनहरा अवसर मिला है।

विकसित भारत के संकल्प के प्रमाण के पक्ष में पिछले कुछ समय से भारत द्वारा निरंतर विविध क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियां और सफलताओं का अथाह भंडार है, जो इस तथ्य का द्योतक है कि भारत यदि इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए लगातार प्रयास रत रहता है तो निश्चित रूप से विकसित भारत के संकल्प को प्राप्त किया जा सकता है।

II. वैदेशिक एवं राजनयिक स्तर पर उपलब्धियां एवं सफलताएं

पिछले कुछ वर्षों के कार्यकलापों पर नजर डालें तो द्रष्टव्य होता है कि वैश्विक और राजनयिक स्तर पर भारत नित्य नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहा है। अभी कुछ समय पूर्व ही भारत की अध्यक्षता में दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी। जी-20 से जुड़े आयोजनों में जन-सामान्य की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन आयोजनों में विचारों और सुझावों का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर नहीं बल्कि नीचे से ऊपर की ओर था। उस भव्य आयोजन से यह सीख भी मिली है कि सामान्य नागरिकों को भी ऐसे गहन तथा अंतर-राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे में भागीदार बनाया जा सकता है जिसका प्रभाव अंततः उनके अपने भविष्य पर पड़ता है। जी-20 शिखर सम्मेलन के माध्यम से ग्लोबल साउथ की आवाज के रूप में भारत के अभ्युदय को भी बढ़ावा मिला, जिससे अंतर-राष्ट्रीय संवाद की प्रक्रिया में एक आवश्यक तत्व का समावेश हुआ। जी-20 के सदस्य देशों का कुल मिलाकर विश्व की आबादी में लगभग दो-तिहाई और ग्लोबल जीडीपी में लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा है, इसलिए यह वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा करने और उनके समाधान के लिए एक आदर्श मंच है।

वैश्विक पर्यावरण संकट से उबरने में भारत का योगदान: ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन ऐसी चुनौतियां हैं जिनका सामना शीघ्रता से करना है। वैश्विक तापमान बढ़ रहा है और मौसम में बदलाव के चरम रूप दिखाई पड़ रहे हैं। हमारे सामने एक गंभीर दुविधा है: अधिक से अधिक लोगों को गरीबी से बाहर निकालने के लिए आर्थिक विकास जरूरी है, लेकिन इस विकास के लिए फॉसिल फ्यूल का प्रयोग भी करना पड़ता है। दुर्भाग्य से, ग्लोबल वार्मिंग का सबसे अधिक कष्ट गरीब तबके के लोगों को सहन करना पड़ता है। ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को विकसित करना और लोकप्रिय बनाना भी एक समाधान है। भारत ने सौर-ऊर्जा और इलेक्ट्रिक वाहनों को नीतिगत प्रोत्साहन देकर इस दिशा में सहायनीय कदम उठाया है।

वैश्विक पर्यावरण संकट से उबरने में भी भारत का प्राचीन ज्ञान, विश्व-समुदाय का मार्गदर्शन कर सकता है। भारत ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों को बढ़ावा देने में अग्रणी योगदान देते हुए ग्लोबल क्लाइमेट एक्शन को नेतृत्व प्रदान कर रहा है। भारत ने, पर्यावरण के प्रति सचेत जीवन-शैली अपनाने के लिए, लाइफ मूवमेंट शुरू किया है। हमारे देश में जलवायु परिवर्तन के मुद्दे का सामना करने में व्यक्तिगत व्यवहार-परिवर्तन को प्राथमिकता दी जा रही है तथा विश्व समुदाय द्वारा इसकी सराहना की जा रही है। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र ने भारत के सुझाव को स्वीकार किया है और वर्ष 2023 को द इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स घोषित किया है। बाजरा जैसे मोटे अनाज हमारे आहार के मुख्य तत्व हुआ करते थे। समाज के सभी वर्ग उन्हें फिर से पसंद करने लगे हैं। ऐसे अनाज पर्यावरण के अनुकूल हैं क्योंकि उनकी उपज कम पानी में ही हो जाती है। ये अनाज उच्च-स्तर का पोषण भी प्रदान करते हैं। यदि अधिक से अधिक लोग मोटे अनाज को भोजन में शामिल करेंगे, तो पर्यावरण-संरक्षण में सहायता होगी और लोगों के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा।

शासन के सभी पहलुओं में बदलाव लाने और लोगों की रचनात्मक ऊर्जा को उजागर करने के लिए हाल के वर्षों में किए गए प्रयासों की श्रृंखला के परिणामस्वरूप, अब विश्व-समुदाय भारत को सम्मान की नई दृष्टि से देखता है। विश्व के विभिन्न मंचों पर हमारी सक्रियता से सकारात्मक बदलाव आने शुरू हो गए हैं। विश्व-मंच पर भारत ने जो सम्मान अर्जित किया है, उसके फलस्वरूप देश को नए अवसर और जिम्मेदारियां भी मिली हैं।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी क्षेत्र में सफलताएं: हमें कोविड-19 के शुरुआती दौर में यह देखने को मिला कि प्रौद्योगिकी में जीवन को बदलने की संभावनाएं होती हैं। 'डिजिटल इंडिया मिशन' के तहत गांव और शहर की दूरी को समाप्त करके, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को समावेशी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। दूर-दराज के स्थानों में अधिक से अधिक लोग इंटरनेट का लाभ उठा रहे हैं। बुनियादी ढांचे में हुए विस्तार की सहायता से सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही विभिन्न प्रकार की सेवाएं लोगों को प्राप्त हो रही हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, भारत गिने-चुने अग्रणी देशों में से एक रहा है। इस क्षेत्र में काफी समय से लंबित सुधार किए जा रहे हैं, और अब निजी उद्यमों को इस विकास-यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को ले जाने के लिए 'गगनयान' कार्यक्रम प्रगति पर है। यह भारत की पहली मानव-युक्त अंतरिक्ष-उड़ान होगी।

इसी अवधि में भारत, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के क्षेत्र पर उतरने वाला पहला देश बना। चंद्रयान-3 के बाद इसरो ने एक सौर मिशन भी शुरू किया। हाल ही में आदित्य स१ को सफलतापूर्वक 'हालो ऑर्बिट' में स्थापित किया गया है। भारत ने अपने पहले एक्स-रे जिसे एक्सपोसैट कहा जाता है, के प्रक्षेपण के साथ इस नए साल की शुरुआत की है। यह सैटेलाइट, अंतरिक्ष के 'ब्लैक होल' जैसे रहस्यों

का अध्ययन करेगा। वर्ष 2024 के दौरान अन्य कई अंतरिक्ष अभियानों की योजना बनाई गई है। हमें अपने वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों पर सदैव गर्व रहा है, लेकिन अब ये पहले से कहीं अधिक ऊंचे लक्ष्य तय कर रहे हैं और उनके अनुरूप परिणाम भी हासिल कर रहे हैं।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का उद्देश्य, संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को और अधिक विस्तार तथा गहराई प्रदान करना है। इसरो के कार्यक्रम के प्रति देशवासियों में जो उत्साह दिखाई देता है उससे नई आशाओं का संचार हो रहा है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में नई उपलब्धियों ने, युवा पीढ़ी की कल्पना शक्ति को नए पंख दिए हैं। इससे देश के बच्चों और युवाओं में, बड़े पैमाने पर, विज्ञान के प्रति रुझान बढ़ेगा तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा। अंतरिक्ष विज्ञान की इन उपलब्धियों से युवाओं, विशेषकर युवा महिलाओं को यह प्रेरणा मिलेगी कि वे, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अपना कार्यक्षेत्र बनाएं। हमारी स्वाधीनता के सौ वर्ष पूरे होने तक की, अमृत काल की अवधि के दौरान अभूतपूर्व तकनीकी परिवर्तन भी होने जा रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे तकनीकी बदलाव, असाधारण गति के साथ, सुखियों से बाहर आकर, हमारे दैनिक जीवन का अंग बन गए हैं। कई क्षेत्रों में भविष्य से जुड़ी आशंकाएं चिंतित करती हैं, लेकिन अनेक उत्साह-जनक अवसर भी दिखाई देते हैं, विशेषकर युवाओं के लिए। हमारे युवा, वर्तमान की सीमाओं से परे जाकर नई संभावनाएं तलाश रहे हैं। उनके मार्ग से बाधाओं को दूर करने और उन्हें अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने की सुविधा प्रदान करने के लिए हमें हर संभव प्रयास करना है। हमारी युवा पीढ़ी चाहती है कि सभी को अवसर की समानता प्राप्त हो। वे समानता से जुड़े पुराने शब्दजाल नहीं चाहते हैं बल्कि, समानता के हमारे अमूल्य आदर्श का यथार्थ रूप देखना चाहते हैं। वास्तव में, हमारे युवाओं के आत्मविश्वास के बल पर ही भावी भारत का निर्माण हो रहा है। युवाओं के मनो-मस्तिष्क को संवारने का कार्य हमारे शिक्षक-गण करते हैं जो सही अर्थों में राष्ट्र का भविष्य बनाते हैं।

महिला सशक्तिकरण संबंधी प्रावधानों का क्रियान्वयन: कुछ समय पूर्व भारत का 'मंगल मिशन' असाधारण महिलाओं की एक टीम द्वारा संचालित किया गया था, और अन्य क्षेत्रों में भी बहनें-बेटियां अब पीछे नहीं हैं। महिला सशक्तीकरण तथा महिला और पुरुष के बीच समानता अब केवल नारे नहीं रह गए हैं। हमने हाल के वर्षों में इन आदर्शों तक पहुँचने की दिशा में काफी प्रगति की है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान में लोगों की भागीदारी के बल पर हर कार्य-क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि महिलाएं ही आने वाले कल के भारत को स्वरूप देने के लिए अधिकतम योगदान देंगी। यदि आधी आबादी को राष्ट्र-निर्माण में अपनी श्रेष्ठतम क्षमता के अनुसार योगदान करने के अवसर दिए जाएं, तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाए, तो ऐसे कौन से चमत्कार हैं जो नहीं किए जा सकते हैं?

नारी शक्ति वंदन अधिनियम: जब संसद ने ऐतिहासिक महिला आरक्षण विधेयक पारित किया तो हमारा देश, स्त्री-पुरुष समानता के आदर्श की ओर आगे बढ़ा। 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम', महिला सशक्तीकरण का एक क्रांतिकारी माध्यम सिद्ध होगा। इससे हमारे शासन की प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने में भी बहुत सहायता मिलेगी। जब सामूहिक महत्व के मुद्दों पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, तब हमारी प्रशासनिक प्राथमिकताओं का जनता की आवश्यकताओं के साथ बेहतर सामंजस्य बनेगा।

सुदृढ़ और स्वस्थ अर्थव्यवस्था: भारत आजादी के अमृतकाल में प्रवेश कर गया है। वर्ष 2047 तक के इस कालखंड में देश हर क्षेत्र के लिए नए लक्ष्य निर्धारित कर रहा है और उन्हें प्राप्त करने के लिए योजनाएं बना रहा है। भारत का सपना है कि इस दौरान वह विकसित देश बने। इस हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नए मुकाम पर ले जाने हेतु प्रयास निरंतर जारी हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि 15 अगस्त, 1947 को भारत के एक स्वतंत्र राष्ट्र बनने के साथ इसकी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण की शुरुआत भी हुई थी। अंग्रेज अपने पीछे आर्थिक रूप से कमजोर एवं अस्थिर भारत छोड़ गए थे। वर्ष 1947 में भारत की जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) या कुल आय 2.7 लाख करोड़ रुपये और जनसंख्या 34 करोड़ थी। केंब्रिज के इतिहासकार एंगस मैडिसन के अनुसार वैश्विक आय में भारत की हिस्सेदारी वर्ष 1700 में 22.6 प्रतिशत (यूरोप के 23.3 प्रतिशत के बराबर) से घटकर 1952 में मात्र 3.8 प्रतिशत रह गई थी। इसे देखते हुए कई विदेशी विशेषज्ञ एकजुट रहने की भारत की क्षमता पर संदेह जताने लगे थे।

तब भारतीय नेता भी चिंतित थे कि कहीं व्यापार और निवेश के माध्यम से विदेशी शासन आर्थिक नियंत्रण के बहाने वापसी न कर ले। ऐसी स्थिति को रोकने के लिए पिछले 76 वर्षों में भारत ने आर्थिक स्वतंत्रता को अपनाया और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं को तैयार करने के साथ-साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में काम किया। आज देश की जीडीपी लगभग 375 लाख करोड़ रुपये हो गई है।

वर्ष 1951 में शुरू की गई पहली पंचवर्षीय योजना कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कृषि एवं सिंचाई पर केंद्रित थी। 1956 में शुरू की गई दूसरी पंचवर्षीय योजना ने भारत की दीर्घकालिक विकास आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आर्थिक आधुनिकीकरण की नींव रखी। पं. नेहरू के बाद प्रधानमंत्री बने लालबहादुर शास्त्री ने हरित क्रांति और श्वेत क्रांति को प्रोत्साहन

दिया। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) की सुविधा के उद्देश्य से 1965 में भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) की स्थापना की गई। हरित क्रांति के परिणामस्वरूप वित्त वर्ष 1978-79 में 13.1 करोड़ टन का रिकार्ड अनाज उत्पादन हुआ। इसने भारत को दुनिया के सबसे बड़े कृषि उत्पादकों में से एक के रूप में स्थापित किया।

पिछली सदी का सातवां दशक भारत के लिए विभिन्न आर्थिक चुनौतियां भी लेकर आया था। रुपये के अवमूल्यन ने विभिन्न उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें बढ़ा दी थीं। 19 जुलाई, 1969 को तत्कालीन प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री इंदिरा गांधी ने देश के 14 बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने का फैसला किया, जिसका मुख्य उद्देश्य अकेले बड़े व्यवसायों के विपरीत बैंकों द्वारा कृषि क्षेत्र को दिए गए ऋण को बढ़ाना था। वित्त वर्ष 1985-86 के आम बजट में प्रत्यक्ष करों को कम करने जैसे कुछ सुधार किए गए।

देश में सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार क्रांति लाने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को व्यापक रूप से श्रेय दिया जाता है। जब पीवी नरसिंह राव ने 1991 में प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला तब उन्होंने एक नई औद्योगिक नीति की घोषणा की, जिसने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण पर जोर दिया। इससे भारत की विकास दर, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई। अटल बिहारी वाजपेयी ने देश की आधारभूत संरचना पर ध्यान दिया। उनकी स्वर्णिम चतुर्भुज योजना ने चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और मुंबई को हाईवे नेटवर्क से जोड़ा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से शहर एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। मनमोहन सिंह के कार्यकाल में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम एवं खाद्य सुरक्षा अधिनियम अस्तित्व में आए जिन्होंने ग्रामीण रोजगार एवं गरीबों को मजबूती दी।

आर्थिक प्रगति के एक नए युग की शुरुआत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने योजना आयोग की जगह नीति आयोग (नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ट्रान्सफॉर्मिंग इंडिया) का गठन किया। मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया और जीएसटी देश की अर्थव्यवस्था को लगातार मजबूत बना रहे हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर में भी काफी सुधार हुआ है। कभी 'तीसरी दुनिया का देश' कहा जाने वाला भारत अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। लालफीताशाही पद्धति को बदलते हुए पीएम नरेन्द्र मोदी व्यक्तिगत रूप से कार्यक्रमों की प्रगति की निगरानी और समीक्षा करते हैं।

सर्वोदय के हमारे मिशन में आर्थिक मंच पर हुई प्रगति सबसे अधिक उत्साहजनक रही है। यह उल्लेख करना जरूरी है कि यह उपलब्धि, आर्थिक अनिश्चितता से भरी वैश्विक पृष्ठभूमि में प्राप्त की गई है। वैश्विक महामारी चैथे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है और दुनिया के अधिकांश हिस्सों में आर्थिक विकास पर, इसका प्रभाव पड़ रहा है। शुरुआती दौर में कोविड-19 से भारत की अर्थव्यवस्था को भी काफी क्षति पहुंची। फिर भी, सक्षम नेतृत्व और प्रभावी संघर्षशीलता के बल पर हम शीघ्र ही मंदी से बाहर आ गए, और अपनी विकास यात्रा को फिर से शुरू किया। अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्र अब महामारी के प्रभाव से बाहर आ गए हैं। भारत सबसे तेजी से बढ़ती हुई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। यह सरकार द्वारा समय पर किए गए सक्रिय प्रयासों द्वारा ही संभव हो पाया है। इस संदर्भ में 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के प्रति जनसामान्य के बीच विशेष उत्साह देखा जा रहा है। इसके अलावा, विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू की गई हैं।

इस प्रकार आज का भारत, आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। सुदृढ़ और स्वस्थ अर्थव्यवस्था इस आत्मविश्वास का कारण भी है और परिणाम भी। हाल के वर्षों में, सकल घरेलू उत्पाद की हमारी वृद्धि दर, प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक रही है। ठोस आकलन के आधार पर हमें पूरा विश्वास है कि यह असाधारण प्रदर्शन जारी रहेगा।

सामाजिक न्याय के अनुरूप समयबद्ध योजनाओं का क्रियान्वयन: जिस दूरगामी योजना-दृष्टि से अर्थव्यवस्था को गति प्राप्त हुई है, उसी के तहत विकास को हर दृष्टि से समावेशी बनाने के लिए सुविचारित जन कल्याण अभियानों को भी बढ़ावा दिया गया है। महामारी के दिनों में, समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए लागू योजनाओं का दायरा, सरकार ने बढ़ा दिया था। बाद में, कमजोर वर्गों की आबादी को संकट से उबरने में सहायता प्रदान करने हेतु इन कल्याणकारी योजनाओं को जारी रखा गया। इस पहल को और अधिक विस्तार देते हुए, सरकार ने 81 करोड़ से अधिक लोगों को अगले पांच साल तक मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। संभवतः, इतिहास में यह अपनी तरह का सबसे बड़ा जन-कल्याण कार्यक्रम है।

हमारी अर्थव्यवस्था का आधार सुदृढ़ होने के कारण, हम उपयोगी प्रयासों का सिलसिला शुरू करने और उसे आगे बढ़ाने में सक्षम हो सके हैं। सशक्तीकरण की यही दृष्टि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों सहित, कमजोर वर्गों के लोगों के लिए सरकार की कार्य-प्रणाली का मार्गदर्शन करती है। वास्तव में, हमारा उद्देश्य न केवल उन लोगों के जीवन की बाधाओं को दूर करना और उनके विकास में मदद करना है, बल्कि उन समुदायों से सीखना भी है। विशेष रूप से जनजातीय समुदाय के लोग, पर्यावरण की रक्षा से लेकर समाज को और अधिक एकजुट बनाने तक, कई क्षेत्रों में, सीख दे सकते हैं।

इनके साथ ही, सभी नागरिकों के जीवन-यापन को सुगम बनाने के लिए अनेक समयबद्ध योजनाएं भी कार्यान्वित की जा रही हैं। घर में सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल की उपलब्धता से लेकर अपना घर होने के सुरक्षा-जनक अनुभव तक, ये सभी बुनियादी न्यूनतम आवश्यकताएं हैं, न कि विशेष सुविधाएं। ये मुद्दे, किसी भी राजनीतिक या आर्थिक विचारधारा से परे हैं और इन्हें मानवीय दृष्टिकोण से ही देखा जाना चाहिए। सरकार ने, केवल जन-कल्याण योजनाओं का विस्तार और संवर्धन ही नहीं किया है, अपितु जन-कल्याण की अवधारणा को भी नया अर्थ प्रदान किया है। हम सभी उस दिन गर्व का अनुभव करेंगे जब भारत ऐसे कुछ देशों में शामिल हो जाएगा जहां शायद ही कोई बेघर हो। 'आयुष्मान भारत योजना' के विस्तारित सुरक्षा कवच के तहत सभी लाभार्थियों को शामिल करने का लक्ष्य है। इस संरक्षण से गरीब और कमजोर वर्गों के लोगों में एक बहुत बड़ा विश्वास जगा है।

नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' का क्रियान्वयन: हमारा अंतिम लक्ष्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जिससे सभी नागरिक व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, अपनी वास्तविक क्षमताओं का पूरा उपयोग करें और उनका जीवन फले-फूले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा ही आधारशिला तैयार करती है, इसलिए 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में महत्वाकांक्षी परिवर्तन किए गए हैं। शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य कहे जा सकते हैं। पहला, आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण और दूसरा, सत्य की खोज। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करती है। यह नीति शिक्षार्थियों को इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार करते हुए हमारी सभ्यता पर आधारित ज्ञान को समकालीन जीवन के लिए प्रासंगिक बनाती है। इस नीति में, शिक्षा प्रक्रिया को विस्तार और गहराई प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है। समावेशी कल्याण की इसी सोच के साथ 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में डिजिटल विभाजन को पाटने और वंचित वर्गों के विद्यार्थियों के हित में, समानता पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के निर्माण को समुचित प्राथमिकता दी जा रही है।

विकसित भारत की संभावना को जो अन्य कारक तार्किक रूप से उचित बनाता है वह है- भारत के पास उपलब्ध जनांकिकीय लाभ। आज भारत सबसे युवा देश है, उसकी जनसंख्या की औसत आयु 28 वर्ष है, जबकि इसकी 62 प्रतिशत आबादी कार्यबल में शामिल है जो भारत को एक नई ऊँचाई पर ले जाने को तैयार है। आज विभिन्न देशों, जैसे चीन व यूरोपीय देशों में वहाँ के लोगों की बढ़ती आयु व महंगा श्रम एक महत्वपूर्ण समस्या बन रही है। अतः कंपनियाँ भारत जैसे सस्ते श्रम प्रधान देशों की तरफ रुख कर रही हैं, जबकि भारत सरकार विभिन्न योजनाओं, जैसे स्किल इंडिया, उस्ताद आदि के माध्यम से उन्हें प्रशिक्षित कर इस अवसर का लाभ उठाने हेतु तैयार कर रही है जो हमारे देश की बेरोजगारी की समस्या के समाधान में मददगार होगा।

भारत की जीडीपी में सेवा क्षेत्र का सबसे ज्यादा योगदान जो एक सकारात्मक संकेत है क्योंकि इससे भारत को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। भारत में बड़ी संख्या में शिक्षित अंग्रेजी बोलने वाले युवा केपीओ, बीपीओ के माध्यम से न केवल स्वयं रोजगार प्राप्त कर रहे हैं बल्कि भारत को एक आई टी हब के रूप में विश्व के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

जहाँ तक शिक्षा की बात है भारत में प्राथमिक स्तर पर तो शत-प्रतिशत नामांकन दर हासिल कर लि है, साथ ही उच्च स्तर पर विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षित व प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार कर रहा है। जो विकसित भारत में उच्च जीवनस्तर के साथ गौरवपूर्ण जीवन जी रहे होंगे। नीति आयोग के अनुसार अगले 15 वर्षों में प्रति व्यक्ति आय जो वर्तमान में एक लाख के आसपास है, में दो लाख की वृद्धि होकर यह 3 लाख तक पहुँच जाएगी जो देश से गरीबी खत्म करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक होगा।

इसके अलावा, आज विभिन्न योजनाओं के माध्यम से भारत सरकार देश के लोगों को बिजली कनेक्शन (दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना), गैस कनेक्शन (उज्ज्वला योजना) तथा भारत निर्माण के माध्यम से आधारभूत संरचना के विकास की दिशा में तेजी से अग्रसर है। डिजिटल इंडिया तथा ई गवर्नेंस के माध्यम से लोगों को इंटरनेट कनेक्शन प्रदान किये जा रहे हैं तथा सरकारी मशीनरी और लोगों के बीच इंटरैक्शन कम करके भ्रष्टाचार को मिटाने की कोशिश की जा रही है। इसी प्रकार स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से शहर और गाँव को स्वच्छ बनाने के लिये जन जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं तथा पर्यावरण प्रदूषण कम करने के लिये नवीकरणीय ऊर्जा को महत्त्व दिया जा रहा है।

अतः विकसित भारत के संकल्प के सामने चुनौतियाँ भी कम गंभीर नहीं हैं लेकिन शुक्र है कि इस बार यह मात्र एक कोरी कल्पना ही नहीं बल्कि तार्किक व संगत परिस्थितियों पर आधारित सुविचारित संकल्पना है जिस पर विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं, जैसे समावेशी विकास के लिये जन धन योजना, मानव संसाधन को शिक्षित करने के लिये स्किल इंडिया मिशन, खाद्य सुरक्षा कुपोषण की समस्या के समाधान हेतु खाद्य सुरक्षा मिशन तथा एक आकर्षक व्यापारिक व व्यावसायिक माहौल बनाने के लिये जीएसटी तथा भ्रष्टाचार को कम करने के लिये ई गवर्नेंस व डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से विकसित भारत के लिये प्रयास शुरू कर दिया गया है।

‘विकसित भारत’ के तहत आर्थिक विकास पर अत्यधिक बल दिया गया है। इस हेतु विकसित भारत संकल्प यात्रा भी निकाली जा रही है। यह सरकार की योजनाओं की संतुष्टि प्राप्त करने के लिये विस्तारित गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने का एक राष्ट्रव्यापी अभियान है। इसके अंतर्गत पूरे देश में भारत की सभी ग्राम पंचायतें, नगर पंचायतें और शहरी स्थानीय निकाय शामिल हैं। यह अभियान भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों, केंद्र सरकार के संगठनों और संस्थानों की सक्रिय भागीदारी के साथ संपूर्ण सरकारी दृष्टिकोण अपनाकर चलाया जा रहा है।

III. प्रमुख चुनौतियां

यद्यपि भारत नित नई उपलब्धियों को प्राप्त कर रहा है तथापि विकसित भारत के संकल्प के समक्ष कई प्रमुख चुनौतियां हैं जिनका समाधान भी अपेक्षित है। इन प्रमुख चुनौतियों की विवेचना निम्नानुसार है:

विश्व में संरक्षणवाद की बढ़ती प्रवृत्ति: विकसित भारत के संकल्प को मूर्त रूप देने में हमें जो विकास दर व अर्थव्यवस्था का आकार आकर्षित कर रहा है वास्तव में वह एक बड़ी चुनौती भी है, क्योंकि 2007-08 की आर्थिक मंदी के बाद से विश्व में संरक्षणवाद की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। सभी जगह संरक्षणवाद का मुख्य मुद्दा है जो भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिये अपनी विकास दर को उच्च स्तर पर बनाए रखने में समस्या उत्पन्न कर सकता है।

इसी प्रकार, यदि विकास दर की बात की जाए तो यह सही है कि भारत पर विश्व में व्यापक स्तर पर आई कुछ समय पूर्व मंदी का प्रभाव ज्यादा नहीं पड़ा तथा वर्तमान में यह सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में एक है, लेकिन क्या यह विकास समावेशी है? आज भारत के 10 प्रतिशत लोगों के पास 90 प्रतिशत संपत्ति है जबकि 90 प्रतिशत जनता के पास मात्र 10 प्रतिशत और यह असंतुलन लगातार बढ़ता ही जा रहा है। यदि मान भी लिया जाए कि अगले 15 वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था 7.5 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी तो मुख्य चुनौती यह है कि इसमें कितना प्रतिशत भाग निम्न वर्ग के हिस्से में आएगा, सिर्फ आंकड़ों से कुछ नहीं होगा।

जनांकिकीय लाभांश के रचनात्मक तरीके से इष्टतम प्रयोग की चुनौती: दूसरी प्रमुख चुनौती जो विकसित भारत के संकल्प के सामने है, वह है- अपने जनांकिकीय लाभांश को कुशल व योग्य बनाकर उसका रचनात्मक तरीके से इष्टतम प्रयोग करना। भारत लगभग 140 करोड़ आबादी वाला देश है, जिसकी 62 प्रतिशत आबादी 59 वर्ष से कम आयु की है अर्थात् कार्यबल में शामिल है। लेकिन इसका लगभग 50 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में प्रच्छन्न बेरोजगारी के रूप में अनुत्पादक कार्यों में लगकर अपनी बहुमूल्य क्षमता को नष्ट कर रहा है। आज भारत में विभिन्न डिग्री या उपाधिधारक लोग चतुर्थ क्लास की नौकरियों के लिये दर-दर भटक रहे हैं क्योंकि उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार कोई कार्य नहीं मिल पा रहा है।

इसके अलावा, भारत में 1991 के बाद से ही संगठित क्षेत्र में लगातार रोजगार घट रहा है। वैसे भी यह कुल रोजगार का 10 प्रतिशत ही है। भारत तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों में तकनीकी विकास मानव श्रम को प्रतिस्थापित कर रहा है। भारत में श्री जॉब डेफिसिट है जिसके तहत कुल रोजगार, अच्छा रोजगार व महिला रोजगार लगातार घट रहा है। अतः सभी लोगों को रोजगार देना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और यह नहीं कर सके तो यह किसी आपदा से कम नहीं होगा।

महिला सशक्तिकरण हेतु और अधिक प्रयासों की आवश्यकता: इसी प्रकार, हमारी आधी आबादी अर्थात् महिलाओं को भारत के विकास के निर्माण में सहयोगी बनाना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहेगा, क्योंकि भारत एक पितृसत्तात्मक समाज है जिसमें अभी तक महिलाओं को घर की चारदीवारी में से आजाद नहीं किया गया है। आज विश्व में किसी भी ऐसे देश का उदाहरण नहीं है जो अपनी महिलाओं को सम्मान व बराबरी का दर्जा दिये बिना केवल पुरुषों के बल पर विकसित बना हो।

पर्यावरण से संबंधित चुनौतियां: विकसित भारत की संकल्पना में जहाँ हमने एक तरफ पर्यावरणीय रूप से साफ-सुथरे व प्रदूषण मुक्त शहरों की कल्पना की है, वहीं नीति आयोग ने अपने विकसित भारत के विजन में प्रत्येक व्यक्ति के पास दोपहिया, चार पहिया वाहन की बात कही है जो कि पर्यावरण में प्रदूषण के महत्वपूर्ण कारण हैं, और जब सारा विश्व सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को बढ़ावा दे रहा है, तब यदि हम व्यक्तिगत परिवहन साधनों को बढ़ावा देंगे तो विकसित भारत नहीं बनाएंगे बल्कि उसके सामने चुनौतियाँ ही खड़ा करेंगे।

ऊर्जा संरक्षण की जरूरत: ऊर्जा किसी भी देश के विकास के हर पहलू में सबसे महत्वपूर्ण व आवश्यक होती है लेकिन आज भारत को अपनी ऊर्जा आवश्यकता का 80% के लगभग आयात से पूरा करना पड़ता है जिससे अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं एवं विकास परियोजनाओं की तरफ ध्यान नहीं दे पाते। अतः नवीकरणीय व गैर-परंपरागत ऊर्जा संसाधनों के माध्यम से इस चुनौती का सामना करने हेतु गंभीर प्रयास करने होंगे।

शिक्षा गुणवत्ता को बेहतर बनाना: साक्षरता दर के मामले में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, किंतु उच्च शिक्षा की गुणवत्ता अभी भी प्रमुख चिंता का कारण है। शीर्ष 100 क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में एक भी भारतीय विश्वविद्यालय या संस्थान नहीं है। देश के सामने रोजगार सृजन का मुद्दा भी महत्वपूर्ण है। प्रति 1000 लोगों पर केवल 0.7 डाक्टर हैं, जबकि डब्ल्यूएचओ का कहना है कि प्रति 1000 लोगों पर औसतन 2.5 डाक्टर होने चाहिए। दुनिया में सबसे बड़ी युवा आबादी के साथ भारत नए कीर्तिमान स्थापित कर सकता है, यदि इसके युवा उचित कौशल और शिक्षा से सुसज्जित हो जाएं। सरकार के निर्णयों के साथ-साथ यह बहुत हद तक हम लोगों में बदलाव की इच्छा पर भी निर्भर करेगा।

IV. अन्य चुनौतियां

गिरता लिंगानुपात (शिशु लिंगानुपात 2001 में 927 से 2011 में 916), उच्च शिशु व मृत्यु दर (क्रमशः 41 प्रति हजार व 72 प्रति लाख), निम्न स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएँ (सबसे ज्यादा कुपोषित बच्चे भारत में डब्ल्यूएचओ) इत्यादि भी विकसित भारत के संकल्प के समक्ष अन्य प्रमुख चुनौतियां हैं।

इसके साथ ऐसी अन्य अनगिनत और चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान किये बिना हम विकसित भारत की संकल्पना को मूर्त रूप नहीं दे सकते या उनका सामना भारत को करना पड़ेगा। जैसे भारत के आंतरिक व बाह्य क्षेत्र में व्याप्त अशांति चाहे वह कश्मीर में अलगाववाद, आतंकवाद की समस्या हो या भारत के आंतरिक क्षेत्रों में लगभग 200 जिलों में फैला नक्सलवाद। बढ़ती असहिष्णुता, गाँव और शहरों के बीच विकास का असंतुलित स्तर जिससे बढ़ता प्रवासन तथा उसके कारण नगरीय जीवन तथा नगरों पर बढ़ता दबाव, बढ़ते स्लम, कृषि का पिछड़पान जिससे बढ़ती किसानों की आत्महत्याएँ इत्यादि। इन सारी चुनौतियों को अनदेखा कर हम एक विकसित भारत का निर्माण नहीं कर सकते हैं।

विकसित संकल्प भारत हेतु किए जाने वाले प्रयास: ऐसा नहीं है कि किसी काम में अगर बहुत सारी चुनौतियाँ हों तो उसे किया नहीं जा सकता, दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है। बस लगन, मेहनत और ईमानदारी से अगर सही दिशा में नियोजित तरीके से प्रयास किया जाए तो हम किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आज भारत के साथ बहुत सारी सकारात्मक परिस्थितियाँ हैं। जो विकसित भारत की संकल्पना को साकार करवा सकती हैं। जैसे- मार्क्स के अनुसार आर्थिक ढाँचा ही मूल ढाँचा होता है जो अन्य सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक ढाँचे को आकार प्रदान करता है।

अतः यदि आर्थिक स्थिति अच्छी है तो इसकी पर्याप्त संभावना है कि आप अन्य परिस्थितियों को अपने अनुसार अनुकूलित कर सकते हैं। आज भारत विश्व की सर्वाधिक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है जिसकी जीडीपी 2.45 ट्रिलियन डॉलर है और नीति आयोग के अनुसार यह अगले 15 वर्षों में 7.5 ट्रिलियन डॉलर के आसपास हो जाएगी तथा केंद्र व राज्यों का व्यय वर्तमान के 38 लाख करोड़ से 92 लाख करोड़ बढ़कर 130 लाख करोड़ हो जाएगा। अतः विकसित भारत का सपना साकार होना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। किसी भी देश के लिये विकास का इंजन उसके उद्योग-धंधे अर्थात् विनिर्माण क्षेत्र होता है। आज भारत विनिर्माण के क्षेत्र में मेक इन इंडिया जैसे इनिशिएटिव के माध्यम से बूमिंग की स्थिति प्राप्त कर रहा है जो न केवल अत्यधिक मात्रा में रोजगार सृजन कर रहा है। बल्कि अधिकांश देशों की समस्या बाजार की अनुपलब्धता है जबकि भारत में एक बहुत बड़ा मध्यवर्ग इन वस्तुओं के बाजार के रूप में भारत के आर्थिक विकास हेतु आधार प्रदान कर रहा है।

‘विकसित भारत’ के संकल्प पूर्ति हेतु आवश्यक सुझाव:

संरचनात्मक रूपांतरण: यह निम्न उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे कृषि) से उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे विनिर्माण एवं सेवाएँ) की ओर संसाधनों के संक्रमण को संदर्भित करता है। इससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है, रोजगार सृजित हो सकते हैं और गरीबी कम हो सकती है।

श्रम बाजारों का निर्माण: इसमें श्रम आपूर्ति की गुणवत्ता एवं मात्रा में सुधार लाना, श्रमिकों के कौशल एवं रोजगार योग्यता को बढ़ाना और निष्पक्ष एवं कुशल श्रम नियमों को सुनिश्चित करना शामिल है। इससे श्रम उत्पादकता बढ़ सकती है, अनौपचारिकता कम हो सकती है और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना: इसमें कंपनियों की दक्षता एवं नवाचार को बढ़ाना, उत्पादों एवं सेवाओं की गुणवत्ता एवं विविधता में सुधार करना और घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों का विस्तार करना शामिल है। इससे आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा मिल सकता है, निर्यात बढ़ सकता है और निवेश आकर्षित हो सकता है।

वित्तीय और सामाजिक समावेशन में सुधार: इसमें गरीबों और हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिये वित्तीय सेवाओं और सामाजिक कल्याण योजनाओं की पहुँच एवं सामर्थ्य का विस्तार करना शामिल है। इससे उनकी आय, बचत और उपभोग के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्तीकरण में सुधार हो सकता है।

शासन सुधार: इसमें शासन की संस्थाओं और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना शामिल है, जैसे विधि का शासन, जवाबदेही, पारदर्शिता और भागीदारी। इससे सार्वजनिक वस्तुओं एवं सेवाओं के वितरण में सुधार हो सकता है, भ्रष्टाचार कम हो सकता है और विश्वास एवं की वृद्धि हो सकती है।

हरित क्रांति के अंतर्गत अवसरों का लाभ उठाना: इसमें नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और जलवायु प्रत्यास्थता जैसी हरित प्रौद्योगिकियों और अभ्यासों को अपनाना और उन्हें बढ़ावा देना शामिल है। इससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम किया जा सकता है, पर्यावरणीय क्षति का शमन हो सकता है और वृद्धि एवं विकास के नए अवसर पैदा हो सकते हैं।

V. निष्कर्ष

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर इसमें कोई शक नहीं है कि विकसित भारत की संकल्पना वास्तव में धरती पर स्वर्ग बनाने की संकल्पना है, लेकिन वास्तव में इसे मूर्त रूप देना भी किसी मांझी के काम से कम चुनौतीपूर्ण नहीं है लेकिन शुक्र है कि मांझी अपने काम में सफल हुआ था और हम भी इसमें अवश्य सफल होंगे। जाहिर है कि आजादी के बाद से हम अपनी यात्रा में बहुत आगे बढ़ चुके हैं, लेकिन 2047 तक एक विकसित समाज बनने के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता डी. सी., इन्टरनेशनल अफेअर्स पार्ट-2, 1946-61, मेट्रोपोलिटन बुक वर्क्स, दिल्ली, 2023, पृ. 88.
2. दीक्षित, संजय, अनब्रेकिंग इंडिया डिजीजन ऑन आर्टिकल 370 एंड सीएए, गरुड़ प्रकाशन, 2020, पृ. 53.
3. ब्रिगेडियर, लाल, ए.के., नीयो-टैरेरिज्म, ज्ञान पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2018, पृ. 6.
4. गुप्ता, कुरुनाकर, इण्डिया इन वल्ड पॉलिटिक्स ए पीरिअड ऑफ ट्रांजिशन, साइंटिफिक बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 2016, पृ. 203-204.
5. जेफफरीज, सी., दी ट्रांसफर ऑफ दी पावर, मैकमिलन, लन्दन, 1960, पृ. 116.
6. मजूमदार, आर. सी., हिस्ट्री ऑफ दी फ्रीडम मूवमेन्ट, साइंटिफिक बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 1962, पृ. 142-145.
7. ब्रिगेडियर, सिन्हा, दीपक, बियोन्ड द बेओट, ज्ञान पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2022, पृ. 64.
8. शर्मा, जे. एस., इण्डियाज स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, न्यू देहली, 1962, पृ. 7.
9. मेनन, वी. के., दी स्टोरी ऑफ दी इन्टेग्रेशन ऑफ दी इण्डियन स्टेट्स, मैकमिलन, न्यूयॉर्क, 1956, पृ. 77.
10. श्रीवास्तव, एम. पी., कॉन्स्टिट्यूशनल एण्ड नेशनल डवलपमेंट इन इण्डिया, एस. एस. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1981, पृ. 31.
11. प्रसाद, ज्योति, इण्डियन कॉन्स्टिट्यूशनल डवलपमेंट, के. नाथ एण्ड कं., मेरठ, 1970, पृ. 17-20.
12. सिंहल, दामोदर पी., नेशनलिज्म इन इण्डिया एण्ड अदर हिस्टोरिकल एसेसेज, मुंशी राममनोहर लाल ओरियन्टल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1997, पृ. 98.
13. यादव, हिमांशु, भारत-पाक संबंध: आतंक से सर्जिकल स्ट्राइक तक, राज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2018, पृ. 38.

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ

1. हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली
2. द हिन्दू नई दिल्ली
3. दैनिक भास्कर राजस्थान
4. जनसत्ता नई दिल्ली
5. इण्डियन एक्सप्रेस
6. योजना
7. कुरुक्षेत्र
8. इण्डिया टुडे
9. आउटलुक
10. प्रतियोगिता दर्पण



International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 9.971